INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCEMENT IN SOCIAL SCIENCE & HUMANITY

An International Open-Access Peer Reviewed Referred Journal

Impact Factor: 5.404 E-ISSN: 2455 –5150 P-ISSN: 2455 -7722

A Study of the Effects of Emotional Intelligence on Secondary School Teachers

***Renu Singh, **Prof. (Dr.) Chetlal Prasad**

*Research Scholar, **Research Supervisor
Sai Nath University, Ranchi, Jharkhand

Paper Received:

10th October, 2021

Paper Accepted:

25th November, 2021

Paper Received After Correction:

04th December, 2021

Paper Published:

26th December, 2021

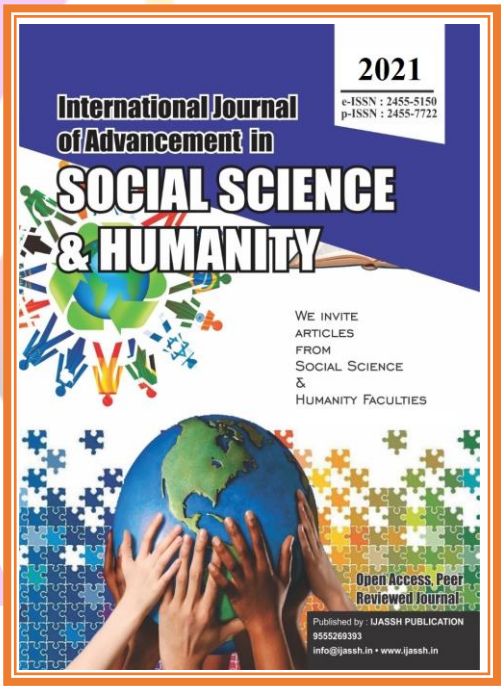

How to cite the article: Renu Singh, Prof. Dr. Chetlal Prasad, A Study of the Effects of Emotional Intelligence on Secondary School Teachers, IJASSH, July-December 2021 Vol 12; 147-157

ABSTRACT

In the education system, teachers are considered to be the main pillars. They are the mediums, because the knowledge of mediums has been used for a long time. Teachers cannot be an effective source of knowledge unless they have the necessary skills, knowledge and talent. Emotion is a more individual experience than personality, mood and nature. Emotion is a feeling which is personal or subjective. Emotions play an important role in guiding the behavior of an individual. Emotions play an important role in giving a particular direction to our behavior and thus shaping our personality according to their development. In order to make education meaningful, it should not only be the goal of physical or mental development of the individual, but the needs and aspirations of a developing society should also be kept in mind. Teachers' feelings are important in this regard. Human beings are psychologically very complex. The human mind is capable of reasoning, remembering, learning, and forming concepts or ideas, as well as direct action for specific characteristics. In other words, humans are only attracted by reason or intelligence, rather they are attracted by passion, emotion or any other emotion that they are attracted to by thirst – often in the direction of action. These feelings are called emotions

सारांश:

शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों को मुख्य स्तंभ माना जाता है। वे मध्यस्थ हैं जिनके माध्यम से ज्ञान को उन छात्रों को हस्तांतरित किया जा सकता है जो समाज की नींव का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षक ज्ञान के प्रभावी स्रोत नहीं हो सकते जब तक कि उनके पास आवश्यक कौशल, ज्ञान और प्रतिभा न हो।भावना व्यक्तित्व, मनोदशा और स्वभाव से जुड़ा व्यक्तिपरक अनुभव है। भावना एक भावना है जो निजी और व्यक्तिपरक है। किसी व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करने में भावनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भावनाएँ हमारे व्यवहार को एक विशेष दिशा प्रदान करने और इस प्रकार हमारे व्यक्तित्व को उनके विकास के अनुसार आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षा को सार्थक बनाने के लिए न केवल व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक विकास का लक्ष्य होना चाहिए, बल्कि एक विकासशील समाज की जरूरतों और आकांक्षाओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। इस संबंध में शिक्षकों की भावनाएं महत्वपूर्ण हैं। मनुष्य मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत जटिल है। मानव मन तर्क करने, याद रखने, सीखने और अवधारणाओं या विचारों को बनाने में सक्षम है, साथ ही विशिष्ट लक्ष्यों के लिए प्रत्यक्ष कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य न केवल तर्क और बुद्धि से प्रेरित होते हैं, बल्कि जुनून, इच्छाओं और कई अन्य भावनाओं के अधीन होते हैं जो उन्हें दृढ़ता से प्रेरित कर सकते हैं–अक्सर कारण से दिशा में। इन भावनाओं को भावनाएं कहा जाता है।

परिचय

शिक्षा को सार्थक बनाने के लिए न केवल व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक विकास का लक्ष्य होना चाहिए, बल्कि एक विकासशील समाज की जरूरतों और आकांक्षाओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। इस संबंध में शिक्षकों की भावनाएं महत्वपूर्ण हैं। शिक्षा लोगों के संज्ञानात्मक गुणों,

सहनशीलता और समझ को विकसित करने का एक साधन है, इसे भविष्य के शिक्षकों को वैश्वीकरण की वास्तविकताओं का सामना करने के लिए तैयार करना चाहिए। आज की शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों को अत्यधिक अपेक्षाओं और मांगों का सामना करना पड़ता है, कई शिक्षक नौकरी में असंतोष का अनुभव करते हैं। सामाजिक विज्ञान में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है; इसका किसी संगठन में काम करने वाले शिक्षक के व्यवहार पर सीधा प्रभाव पड़ता है और यह उनके पेशे की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों को मुख्य स्तंभ माना जाता है। वे मध्यस्थ हैं जिनके माध्यम से ज्ञान को उन छात्रों को हस्तांतरित किया जा सकता है जो समाज की नींव का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षक ज्ञान के प्रभावी स्रोत नहीं हो सकते जब तक कि उनके पास आवश्यक कौशल, ज्ञान और प्रतिभा न हो। हाल के वर्षों में, शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धि की अवधारणा को इसके बहुत महत्व के कारण शैक्षणिक संस्थानों में ध्यान दिया गया है। शिक्षकों की भावनात्मक भलाई एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनता जा रहा है। शिक्षकों को भावनात्मक और सामाजिक सीखने के कौशल सिखाने की आवश्यकता पर महत्वपूर्ण रूप से बल दिया जा रहा है वास्तव में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक प्रकार की सामाजिक बुद्धिमत्ता है जिसमें स्वयं की और दूसरों की भावनाओं को नियंत्रित करना शामिल है; अपने जीवन को स्थापित करने के लिए इन भावनाओं का उपयोग करने की क्षमता और उनके बीच चुनाव करें। इसलिए, शिक्षकों के प्रदर्शन को प्रभावी बनाने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता के कौशल की बहुत आवश्यकता होती है। यह कौशल शिक्षकों को न केवल अपने छात्रों के साथ बल्कि उनके सहयोगियों के साथ भी व्यवहार करने में सक्षम बनाता है। वर्तमान अध्ययन झारखण्ड के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक प्रभावशीलता के स्तर का पता लगाने और यह पता लगाने का एक प्रयास है कि क्या भावनात्मक बुद्धि और शिक्षक प्रभावशीलता का कोई महत्वपूर्ण संबंध है। किसी व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित और निर्देशित करने में भावनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

IJASSH

भावनाएँ हमारे व्यवहार को एक विशेष दिशा प्रदान करने और इस प्रकार हमारे व्यक्तित्व को उनके विकास के अनुसार आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। व्युत्पत्ति के अनुसार, शब्द "भावना" लैटिन शब्द "इमोवर" से लिया गया है जिसका अर्थ है "उत्तेजित करना" या "उत्साहित करना". ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी ने भावना को "किसी भी आंदोलन या मन की अशांति, भावना और जुनून, किसी भी उत्तेजना या उत्तेजित मानसिक स्थिति" के रूप में परिभाषित किया है।

शोध की साहित्यिक विवेचना

वुडवर्थ (1945) के अनुसार भावना एक जीव की "चलित" या "उत्तेजित" अवस्था है। यह भावना की एक उत्तेजित अवस्था है, जो स्वयं व्यक्ति को दिखाई देती है। यह एक परेशान पेशी और ग्रंथियों की गतिविधि है जो बाहरी पर्यवेक्षक को दिखाई देती है। क्रो एंड क्रो (1973) ने भावना को एक प्रभावी अनुभव के रूप में परिभाषित किया जो सामान्यीकृत रैखिक समायोजन के साथ होता है और जो खुद को उसके खुले व्यवहार में दिखाता है। चार्ल्स जी. मॉरिस (1979) ने भावना को एक जटिल भावात्मक अनुभव के रूप में देखा जिसमें फैलाना शारीरिक परिवर्तन शामिल है और इसे विशेषताओं के व्यवहार पैटर्न में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जा सकता है।

मैकडॉगल (1949) ने इसे भावात्मक अनुभवों के रूप में परिभाषित किया है जो एक सहज उत्तेजना के दौरान होता है

लेवेन्सन, एकमैन और फ्रिसन बताते हैं कि (1990), विभिन्न भावनाएं विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करती हैं और उनके अलग–अलग परिणाम होते हैं, उदाहरण के लिए, क्रोध जोरदार कार्रवाई के लिए पर्याप्त ऊर्जा की एक नाड़ी उत्पन्न करता है, प्रेम शांत और संतोष की एक सामान्य स्थिति उत्पन्न करता है जिससे सहयोग की सुविधा होती है, खुशी नकारात्मक भावनाओं को रोकती है और उपलब्ध ऊर्जा में वृद्धि को बढ़ावा देती है जबकि उदासी ऊर्जा और उत्साह में गिरावट लाती है। इससे पता चलता है कि भावनाएं या तो सहायक या हानिकारक हो

IJASSH

सकती हैं, इसलिए उन्हें पहचानने और विनियमित करने की आवश्यकता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की परिभाषा

भावनात्मक बुद्धिमत्ता सिर्फ अच्छा होना नहीं है; इसका अर्थ भावनाओं को स्वतंत्र शासन देना नहीं है; न ही यह आनुवंशिक रूप से तय है; न ही किसी के भावनात्मक और पूर्वाग्रहों को किसी के निर्णय को बेहतर बनाने की अनुमति देना। भावनात्मक बुद्धिमत्ता नया पैमाना है, जो किसी व्यक्ति का न्याय करने के लिए तेजी से लागू होता है, यह पता लगाने के लिए कि कोई व्यक्ति अपने जीवन में कितना आगे है। इसलिए, यह सिर और हृदय के सामंजस्य का आह्वान करता है। संवेगात्मक बुद्धि का तात्पर्य अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने की क्षमता से है। यह अपने आप में और हमारे रिश्तों में भावनाओं को अच्छी तरह से प्रबंधित करने के लिए खुद को प्रेरित करता है। यह उचित और प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए अपनी और दूसरों की भावनाओं की निगरानी, मार्गदर्शन, विनियमन और उन्हें ठीक करना है। यह लोगों को अपने सामान्य लक्ष्यों की दिशा में एक साथ सुचारू रूप से काम करने में सक्षम बनाता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह है जो किसी व्यक्ति को प्रतिस्पर्धा में बढ़त देती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की परिभाषा

सैलोवी और मेयर (1997) ने विस्तार से बताया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं को समझने, भावनाओं तक पहुँचने और उत्पन्न करने की क्षमता थी ताकि विचार की सहायता की जा सके, भावनाओं और भावनात्मक ज्ञान को समझा जा सके और भावनात्मक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने के लिए भावनाओं को प्रतिबिंबित किया जा सके।

डेनियल गोलेमैन (1998) के शब्दों में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता हमारी अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने की क्षमता है, खुद को प्रेरित करने के लिए, और अपने और अपने रिश्तों में भावनाओं को अच्छी तरह से प्रबंधित करने की क्षमता है।

रॉबर्ट कूपर (1996), ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता को मानव ऊर्जा, सूचना,

IJASSH

विश्वास, रचनात्मकता और प्रभाव के स्रोत के रूप में भावनाओं की शक्ति और कौशल को समझने, समझने और प्रभावी ढंग से लागू करने की क्षमता के रूप में देखा।

जोशुआ फ्रीडमैन (1999), "भावनात्मक बुद्धिमत्ता पहचानने, समझने और चुनने का एक तरीका है कि हम कैसे सोचते हैं, महसूस करते हैं और कार्य करते हैं। यह दूसरों के साथ हमारी बातचीत और खुद के बारे में हमारी समझ को आकार देता है। यह परिभाषित करता है कि हम कैसे और क्या सीखते हैं; यह हमें प्राथमिकताएं निर्धारित करने की अनुमति देता है; यह हमारे दैनिक कार्यों के बहुमत को निर्धारित करता है"।

शिक्षक प्रभावशीलता

शिक्षण शिक्षा की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह कई गुना विशेषताओं और संभावनाओं का एक जटिल है जो एक साथ शिक्षक बनाते हैं। शिक्षक को शैक्षिक प्रक्रिया की धुरी के रूप में माना जा सकता है और राष्ट्र के निर्माण में उसके कंधों पर सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है। शिक्षण एक शिक्षक का मौलिक कर्तव्य है और एक सफल शिक्षक बनाने के लिए इसे प्रभावी बनाना होगा 31. शिक्षक प्रभावशीलता के क्षेत्र में, कई अध्ययन किए गए हैं और शैक्षिक प्रशासक, शिक्षक शिक्षक, माता–पिता, उनकी राष्ट्रीयता के बावजूद, जाति, पंथ और रंग ने प्रभावी शिक्षक के लिए वास्तविक चिंता दिखाई है।

(प) प्रेसेज मानदंडः इसके अनुसार, शिक्षक की प्रभावशीलता शिक्षकों की व्यक्तिगत विशेषताओं, ज्ञान, कौशल और उपलब्धियों आदि से संबंधित होनी चाहिए। चार प्रकार के चर हैं जिन्हें आम तौर पर शिक्षक प्रभावशीलता के पूर्व मानदंड के रूप में स्वीकार किया जाता है जैसेः

(ए) शिक्षक के व्यक्तित्व गुण

(बी) प्रशिक्षण में शिक्षकों के लक्षण

(सी) शिक्षकों का ज्ञान और उपलब्धि

(डी) सेवाकालीन शिक्षण की स्थिति विशेषताएँ

गो एट। अल।, (2008) ने शिक्षक प्रभावशीलता को संबोधित करने वाले अनुसंधान, नीति और मानकों का

IJASSH

विश्लेषण करके शिक्षक प्रभावशीलता की पांच–सूत्रीय परिभाषा विकसित की:

- *प्रभावी शिक्षकों को सभी छात्रों के लिए उच्च उम्मीदें होती हैं और छात्रों को मूल्य वर्धित या अन्य परीक्षण–आधारित विकास उपायों या वैकल्पिक उपायों द्वारा मापा जाता है।*
- *प्रभावी शिक्षक छात्रों के लिए सकारात्मक शैक्षणिक, मनोवृत्ति और सामाजिक परिणामों में योगदान करते हैं जैसे नियमित उपस्थिति, अगली कक्षा में समय पर पदोन्नति, समय पर स्नातक, आत्म–दक्षता और सहकारी व्यवहार।*
- *प्रभावी शिक्षक विविध संसाधनों का उपयोग सीखने के अवसरों की योजना बनाने और संरचना करने के लिए करते हैं, छात्रों की प्रगति की औपचारिक रूप से निगरानी करते हैं, आवश्यकतानुसार निर्देश को अपनाते हैं; और सबूत के कई स्रोतों का उपयोग करके सीखने का मूल्यांकन करें।*
- *प्रभावी शिक्षक कक्षाओं और स्कूलों के विकास में योगदान करते हैं जो विविधता और नागरिक–दिमाग को महत्व देते हैं।*
- *प्रभावी शिक्षक छात्र की सफलता सुनिश्चित करने के लिए अन्य शिक्षकों, प्रशासकों, माता–पिता और शैक्षिक पेशेवरों के साथ सहयोग करते हैं, विशेष रूप से भविष्य के लिए उच्च जोखिम वाले लोगों के लिए।*

अध्ययन का औचित्य

शिक्षा एक त्रि–ध्रुवीय प्रक्रिया है जहां शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। तब शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी संपत्ति उसके भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक होंगे। वर्तमान पीढ़ी के छात्रों को अपने जीवन में हर रोज नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है और भावनात्मक दबाव उनमें से एक है। छात्रों की इन जटिल समस्याओं से निपटने में मदद करने के लिए शिक्षकों को कौशल से लैस करने की आवश्यकता है। संवेगात्मक बुद्धि उस प्रकार का कौशल या योग्यताओं का समूह है जो शिक्षक के लिए अपने

IJASSH

विद्यार्थियों को तदनुसार संभालने के लिए आवश्यक है।

एक भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक स्वयं को रोल मॉडल के रूप में रखकर और कक्षा की गतिविधियों को उचित तरीके से औपचारिक रूप देकर अपने छात्रों की ओर से जिम्मेदार व्यवहार पर जोर दे सकता है। एक भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक शिक्षार्थियों के बीच आत्मविश्वास, जिज्ञासा, इरादा, आत्म–नियंत्रण, संबंधितता पैदा कर सकता है और कक्षा के माहौल को इतना जीवंत बना सकता है ताकि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अंतिम लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। यह दृढ़ता से संभव है कि भावनात्मक साक्षरता जीवन में सफलता की कुंजी है।

समस्या का चयन

वर्तमान अध्ययन झारखण्ड के उच्च विद्यालयों के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता सूची को विकसित करने और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का पता लगाने का एक प्रयास है। दूसरे, अध्ययन इस जिले में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता के स्तर का भी पता लगाएगा। इसके अलावा, यह लिंग और स्कूलों के प्रकार के आधार पर इन शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि के स्तर और शिक्षक प्रभावशीलता की तुलना करने का भी प्रयास करेगा। अंत में, यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण में प्रभावशीलता के बीच संबंध का भी पता लगाएगा। इसलिए वर्तमान अध्ययन की समस्या को इस प्रकार बताया गया है 'झारखण्ड में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक प्रभावशीलता'

अध्ययन का परिसीमनः

अध्ययन निम्नलिखित तक सीमित है:

- *अध्ययन केवल झारखण्ड के झारखण्ड तक सीमित है।*
- *अध्ययन भी केवल झारखण्ड के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों तक ही सीमित है।*
- *अध्ययन लिंग और स्कूल के प्रकार जैसे चरों तक सीमित है।*

IJASSH

अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य हैं:–

1. झारखण्ड में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता पैमाना विकसित करना।

2. झारखण्ड में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का पता लगाना

6. झारखण्ड में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच संबंध का पता लगाना।

परिकल्पना का कथन

अध्ययन की निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं हैं:

1. भावनात्मक बुद्धिमत्ता के आयामों के संबंध में पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर मौजूद नहीं है। आत्म जागरूकता, आत्म नियंत्रण, आत्म प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल।

2. भावनात्मक बुद्धि के आयामों के संबंध में सरकारी और घाटे वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर मौजूद नहीं है। आत्म जागरूकता, आत्म नियंत्रण, आत्म प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्याय में मूल अवधारणाओं की परिभाषा के साथ–साथ अध्ययन की सैद्धांतिक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि देने का प्रयास किया गया है। इसमें एक परिचयात्मक अध्याय के सभी प्रासंगिक खंड शामिल हैं। बाद के अध्याय में संबंधित साहित्य की समीक्षा और जांच के तहत क्षेत्र से संबंधित कुछ केस स्टडीज को प्रस्तुत किया गया है। संबंधित क्षेत्र में उपलब्ध सभी अध्ययनों की समीक्षा करने का एक गंभीर प्रयास किया जाता ळें

संदर्भ

1. *इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च में, वॉल्यूम 12, नंबर 2, 14, जुलाई, 2016।*
2. *सुदर्शन मिश्रा और जाकिर हुसैन लस्कर, "माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता"। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च (आईजेएसआर) में, वॉल्यूम 2, नंबर 10,12, अक्टूबर, 2013।*
3. *सटन, आर.ई. और व्हीटली, के.एफ, "शिक्षकों की भावनाएँ और शिक्षण।" इन एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यू, वॉल्यूम 15, नंबर 4, 320, 2013।*
4. *पुनिया, बीके, "इम्पैक्ट ऑफ डेमोग्राफिक वेरिएबल्स ऑन इमोशनल इंटेलिजेंस एंड लीडरशिप बिहेवियर ऑफ कॉरपोरेट एक्जीक्यूटिव्स"। जर्नल ऑफ ऑर्गनाइजेशनल बिहेवियर, वॉल्यूम प्ट, नंबर 2, 18–22, अप्रैल, 2015 में।*
5. *थिलागवती, टी, "तिरावरुर जिले में माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों का समायोजन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता"। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशनल रिसर्च (श्रज्म्त), वॉल्यूम 2, नंबर 5, 1, मई, 2013 में।*
6. *विश्वनाथ, पी और शंकर, वी.एस "शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच भावनात्मक खुफिया"।*
7. *ग्लोबल रिसर्च एनालिसिस, टवस.2, छव.12, 57–58, दिसंबर, 2013*
8. *जगविंदर सिंह, "इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ बी.एड स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर जेंडर"। ग्लोबल रिसर्च एनालिसिस में, वॉल्यूम 2, नंबर 6, 56, जून 2013।*
9. *जसराज कौर और सुनीता गोयल, "उनके लिंग और स्थान के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता"। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एक्सपेरिमेंटेशन एंड इनोवेशन, वॉल्यूम 1, नंबर 4, 6, जुलाई 2011.*

REFERENCES

1. Indian Journal of Applied Research, Vol 12, No, 2, July, 2016.
2. Sudarshan Mishra and Zair Hussain Laskar, "Madhyamik Vidyalayon me Shikshakon ki Bhavnatmak Bhuddhimatta", International Journal of Scientific Research (IJSR), Vol 2, No, 10,12, October, 2013.
3. Satan, R.E., and Whitely, K.F., "Shikshakon ki Bhavnayen aur Shikshan" Education Psychology Review, Vol 15, No. 4, 320, 2013.
4. Puniya, BK, "Impact of Demographic Variables on Emotional Intelligence and Leadership behaviour of Corporate Executives", Journal of Organizational Behaviour, No. 2, 18-22, April 2015
5. Thalagwati, T., "Tiravarur Zile me Madhyamik Vidyalay Shikshakon ka Samayojan aur Bhavnatmak Buddhimatta" International Journal of Teacher Educational Research (JTER), Vol 2, No 5,1 May 2013

IJASSH

6. Vishwanath, P., Shankar V.S., “Shikshak Prashikshuon ke Beech Bhavnatmak Khufiya”
7. Global research Analysis, Vol 2, No. 12, 57-58, December, 2013
8. Jagvinder Singh, “Emotional Intelligence of B.Ed. students in realtion to their gender”, Global Research Analysis, Vol 2, No. 6, 56, June 2013
9. Jasraj Kaur and Sunita Goyal, “Unke ling aur sthan ke sambandh me shikshak prabhavsheelta”. Indian Journal of Education Research Experimentation and Innovation, Vol 1, No. 4, 6 July 2011

IJASSH